EWC III

अग्रिम चेतावनी देने के बारे में
तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेरेन्स

संकल्पना से कार्यवाही तक

27-29 मार्च, 2006,
बॉन, जर्मनी

अग्रिम चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणालियां विकसित करना: एक जांच-सूची

International Strategy for Disaster Reduction
Federal Foreign Office

भूमिका

विपत्ति के ख़तरों को कम करने में अग्रिम चेतावनी देना एक प्रमुख तत्व है। यह जीवन की क्षति को रोकती और विपत्तियों के आर्थिक व भौतिक प्रभावों को कम करती है। कारगर होने के लिए यह ज़रूरी है कि अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां ख़तरे में पड़ सकने वाले समुदायों को सक्रिय रूप से सम्बद्ध करें, जनता को ख़तरों के बारे में शिक्षित और जागरूक बनाए, संदेश और चेतावनियां कारगर ढंग से प्रसारित करें और सुनिश्चित करें कि तैयारी की स्थिति लगातार बनी रहती है।

जनवरी, 2005 में, वर्ल्ड कान्फेरेन्स ऑन डिसास्टर रिडक्शन (विपदाएं कम करने के बारे में वैश्विक कान्फेरेन्स) ने ''ह्योगो फ्रेमवर्क फॉर एक्शन 2005-2015: बिल्डिंग दि रिज़ीलिएन्स ऑफ नेशन्स एन्ड कम्यूनिटीज़ टू डिसास्टर'', अपनाया। इसमें अग्रिम चेतावनी देने के महत्व के स्पष्ट संदर्भ शामिल थे और इसने *''चेतावनी देने की जन-केंद्रित कार्य-प्रणालियां, विशेष रूप से ऐसी'' प्रणालियां जिनकी चेतावनियां समय से और ख़तरे में पड़ सकने वाले लोगों को समझ में आने वाली हों। (...) जिसमें यह भी शामिल हों कि ''चेतावनी मिलने पर वे क्या करें (...)''* (पैरा 17, ii.d.9) विकसित करने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया।

बॉन, जर्मनी में 27-29 मार्च 2006 को आयोजित, अग्रिम चेतावनी देने के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय कान्फेरेन्स ने अग्रिम चेतावनी देने की नई और नव-प्रवर्तक परियोजनाएं प्रस्तुत करने और पूरे विश्व में प्राकृतिक ख़तरों और जोखिमों और जन-केन्द्रित अग्रिम चेतावनी प्रणालियां लागू करके उनके प्रभावों को कम-से-कम करने के तरीकों पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध कराए। प्रस्तुत दस्तावेज़ को ''अग्रिम चेतावनी देने की प्रणालियां विकसित करना: एक जांच-सूची'' कान्फेरेन्स के निष्कर्षों के रूप में चर्चाओं और कान्फेरेन्स के दौरान प्रस्तुत किए गए वास्तविक उदाहरणों के बारे में जानकारी देने और उन्हें रेखांकित करने तथा कार्यवाही के ह्योगो ढांचे के अग्रिम जानकारी देने से सम्बंधित अवयवों को लागू करने की प्रक्रिया को सहयोग देने के लिए विकसित किया गया है।

जांच-सूची, जो अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियों के चार मुख्य तत्वों और कार्यवाहियों को आधार मानकर तैयार की गई है, का लक्ष्य है कि यह मुख्य तत्वों की एक सरल सूची हो, जिसका राष्ट्रीय सरकारें या सामुदायिक संस्थान, अग्रिम चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणालियां विकसित करते समय या उनका मूल्यांकन करते समय संदर्भ ले सकें, या बस यह निश्चित कर सकें कि उनमें सभी महत्वपूर्ण कार्य-विधियां मौजूद हैं। इसका प्रयोजन एक व्यापक डिज़ाइन मैनुअल नहीं, बल्कि इसकी जगह इसे यह सुनिश्चित करने के लिए कि अग्रिम चेतावनी देने की एक अच्छी कार्य-प्रणाली के सभी प्रमुख तत्व इसमें मौजूद हैं, एक व्यावहारिक, गैर-तकनीकी संदर्भ का साधन बनना है।

आभार

जांच-सूची तैयार करने का काम, अग्रिम चेतावनी देने के बारेमें तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेरेन्स के सचिवालय द्वारा, जर्मनी की सरकार की आर्थिक सहायता से, शुरू किया गया था। परियोजना की ज़िम्मेदारी ISDR प्लेटफॉर्म फॉर दि प्रोमोशन ऑफ अर्ली वार्निंग (PPEW) के परामर्शदाता एलिसन विल्टशायर द्वारा, बॉन में ली गई थी। कान्फेरेन्स के अढ़ाई दिनों के दौरान एकत्रित की गई जानकारी के अतिरिक्त, संयुक्त राष्ट्र की अन्तर्राष्ट्रीय पद्धति और उसके अलावा, अग्रिम चेतावनी देने और विपत्ति से होने वाले ख़तरों को कम करने से सम्बद्ध संस्थाओं और व्यक्तियों से काफी महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हुई थी।

इस सामुहिक प्रयास में अपना योगदान देने वाले सभी लोग, जिनमें अग्रिम चेतावनी देने के बारे में तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय कान्फेरेन्स के सभी भागीदार और परियोजना प्रस्तुतकर्ता, जिन्होंने जन सामान्य को सबसे अधिक महत्व देने वाली, चेतावनी देने की कारगर कार्य-प्रणालियां प्राप्त करने के तरीकों के बारे में अपने विचार, अपनी चिन्ताएं और अपने वास्तविक अनुभव खुले रूप से शेयर किए, प्रशंसा और धन्यवाद के पात्र हैं।

''जो देश, विपत्ति के ख़तरों में कमी लाने के लिए नीति-विधान और संस्थागत ढांचे विकसित करते हैं और जो विशिष्ट और मापे जा सकने वाले संकेतकों के जरिए इनके विकास और प्रगति पर नज़र रख सकते हैं, उनमें ख़तरों का प्रबंध करने, उनका मुकाबला करने और उनमें कमी लाने के उपायों का अनुपालन करने के लिए समाज के सभी क्षेत्रों की व्यापक सहमति प्राप्त करने की क्षमता अधिक होती है।''

ह्योगो फ्रेमवर्क फॉर ऐक्शन 2005-2015: बिल्डिंग रिजिलिएन्स ऑफ नेशन्स एन्ड कम्यूनिटीज़ टू डिसास्टर्स, पैराग्राफ 16।

'ईनसाइड' क्या है

इस दस्तावेज़ का लक्ष्य-अग्रिम चेतावनी देने की कारगर कार्य-प्रणालियों से सम्बद्ध बुनियादी तत्व, कार्यवाहियों और अच्छे आचरण की एक संक्षिप्त, सरल जांच-सूची प्रस्तुत करना है। इसका प्रयोजन अग्रिम चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणालियां डिज़ाइन करने के लिए एक व्यापक 'कैसे करें' सूची न होकर एक गैर-तकनीकी संदर्भ साधन होना है।

इस जांच-सूची का उपयोग कैसे करें

यह दस्तावेज़ परस्पर संबधित दो भागों में बंटा हुआ है, जिन्हें उसी क्रम में पढ़ना चाहिए। पहला खण्ड, अग्रिम चेतावनी देने के बारे में महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि जानकारी और सर्वसमावेशक मुद्दे उपलब्ध कराता है। दूसरे भाग में कार्यवाहियों और पहलों की कई व्यावहारिक जांच-सूचियां दी गई हैं, जिन पर अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां विकसित करते समय और उनका मूल्यांकन करते समय विचार किया जाना चाहिए।

1. अग्रिम चेतावनी देने के मुख्य तत्व, आपस में जुड़े हुए विभिन्न मुद्दे, और अग्रिम चेतावनी देने से सम्बद्ध कार्यकर्ता

अग्रिम चेतावनी देने की एक कारगर जन-केन्द्रित प्रणाली को समाविष्ट करने वाले प्रमुख तत्वों, और उनमें से प्रत्येक का महत्वपूर्ण होने के कारणों पर बल देने के लिए अग्रिम चेतानवी देने के चार अवयवों: ख़तरे का ज्ञान; तकनीकी निगरानी और चेतावनी सेवा; संचारण और चेतावनी का प्रसारण; सामुदायिक प्रतिक्रिया की क्षमता पर एक संक्षिप्त खण्ड शामिल किया गया है।

इन चार तत्वों के अतिरिक्त, आपस में जुड़े कई अलग-अलग मुद्दों और अग्रिम चेतावनी देने की कारगर कार्य-प्रणालियों की धारणीयता को वार्णित किया गया है। इनमें शामिल हैं: कारगर प्रशासन और संस्थागत व्यवस्थाएं, अग्रिम चेतावनी के बारे में कई ख़तरों वाली नीति, स्थानीय समुदायों की सम्बद्धता और लैंगिक परिप्रेक्ष्य और सांस्कृतिक विभिन्नता पर विचार।

प्रत्येक जांच-सूची के आरंभ में दी गई प्रमुख कार्यकर्ताओं की सूची का कुछ संदर्भ और अतिरिक्त पृष्ठभूमि उपलब्ध कराने के लिए, अग्रिम चेतावनी देने की गतिविधियों से सम्बद्ध मुख्य कार्यकर्ताओं, और उनकी भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों का स्पष्टीकरण शामिल किया गया है।

2. अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली विकसित करने, उसका मूल्यांकन या उसे परिष्कृत करने में मदद के लिए व्यावहारिक कार्यवाहियों की जांच-सूची

उपयोग करने में आसानी और व्यवहार्यता के लिए, अग्रिम चेतावनी देने के चार तत्वों में से प्रत्येक के लिए एक अलग जांच-सूची विकसित की गई है? प्रशासन और संस्थागत व्यवस्थाओं के आपस में जुड़े हुए विभिन्न मुद्दों का महत्वपूर्ण होने के कारण एक अतिरिक्त जांच-सूची भी दी गई है।

प्रत्येक जांच-सूची को, कई मुख्य थीमों के समूह में रखा गया है और इसमें कार्यवाहियों और चरणों की एक सरल सूची दी गई है। यदि इसका पालन किया गया, तो यह एक ठोस आधार उपलब्ध कराएगी जिस पर अग्रिम चेतावनी देने की एक कार्य-प्रणाली विकसित या मूल्यांकित की जा सकेगी।

''विकासशील देशों के गरीब समुदायों के विपत्तियां रोकने के रचनात्मक प्रयासों से बहुत-कुछ सीखा गया है। रोक-थाम की नीति इतनी महत्वपूर्ण है कि उसे सिर्फ सरकारों और अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों पर नहीं छोड़ा जा सकता। सफल होने के लिए, इससे साथ-सभ्य समाज, निजी-क्षेत्र और मीडिया को भी अवश्य शामिल किया जाना चाहिए।''

कोफी अन्नान
यूएन महा-सचिव
प्राकृतिक विपत्तियों में कमी लाने के लिए
अन्तर्राष्ट्रीय दशक (IDNDR)
कार्यक्रम मंच
जिनेवा, जुलाई, 1999

अग्रिम चेतावनी देने की जन-केन्द्रित कार्य-प्रणालियां

1. मुख्य तत्व

अग्रिम चेतावनी देने की जन-केन्द्रित कार्य-प्रणालियों का उद्देश्य है, ख़तरों की आशंका वाले व्यक्तियों और समुदायों को, व्यक्तिगत आघात, जीवन की क्षति और सम्पत्ति व वातावरण को होने वाले नुकसान की संभावना को कम करने के लिए, पर्याप्त समय से और सही ढंग से कार्यवाही करने के लिए सक्षम बनना।

अग्रिम चेतावनी देने की सम्पूर्ण और कारगर कार्य-प्रणाली में एक दूसरे से जुड़े हुए चार तत्व होते हैं, जिनका विस्तार ख़तरों की जानकारी और असुरक्षा से लेकर तैयारी और प्रतिक्रिया करने की क्षमता तक है। अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली के सर्वोत्तम आचरण में भी सभी तत्व एक-दूसरे से दृढ़तापूर्वक जुड़े होते हैं और उनमें आपसी संचारण के कारगर स्रोत होते हैं।

ख़तरों का ज्ञान

ख़तरे किसी ख़ास स्थान पर, ख़तरों और असुरक्षाओं के संयोजन से पैदा होते हैं। ख़तरे के मूल्यांकन के लिए ज़रूरी होता है आंकड़ों का व्यवस्थित संग्रह और विश्लेषण और इसके लिए, ख़तरों की गतिशील प्रकृति और शहरीकरण, ग्रामीण भू-उपयोग में परिवर्तन, वातावरण में ख़राबी और जलवायु में परिवर्तन-जैसी प्रक्रियाओं से उत्पन्न होने वाली असुरक्षा पर भी विचार करना चाहिए। ख़तरे के मूल्यांकनों और मानचित्र से लोगों को उत्प्रेरित करने से, अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियों की ज़रूरतों का प्राथमिकीकरण करने में मदद मिलती है और वे विपत्तियों को रोकने और उन पर प्रतिक्रिया करने के लिए मार्ग-दर्शन करते हैं।

निगरानी रखने और चेतावनी देने वाली सेवा

इस कार्य-प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण है चेतावनी देने वाली सेवाएं। ख़तरों की भविष्यवाणी करने और उनका पूर्वानुमान लगाने का एक ठोस वैज्ञानिक आधार और चेतावनी देने की एक विश्वसनीय कार्य-प्रणाली होनी चाहिए, जो दिन के 24 घंटे काम करती हो। समयोचित ढंग से सही चेतावनी देने के लिए, ख़तरों के पैरामीटर्स और अग्रगामी संकेतों को लगातार मॉनीटर करते रहना आवश्यक है। विभिन्न ख़तरों की चेतावनी देनेवाली सेवाओं में, यथासंभव समन्वय होना चाहिए, ताकि संस्थागत, कार्यविधिक और संचारण नेटवर्क का साझा लाभ प्राप्त किया जा सके।

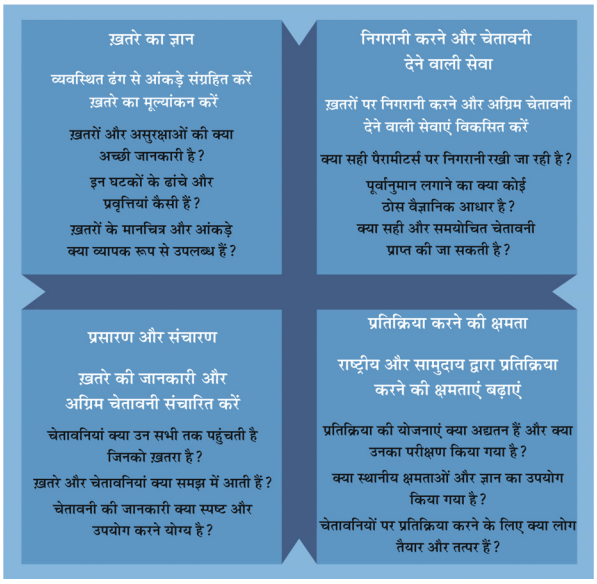

अग्रिम चेतावनी देने की जन-केन्द्रित कार्य-प्रणाली के चार मुख्य तत्व: UN/ISDR प्लेटफॉर्म फॉर दि प्रोमोशन ऑफ अर्ली वार्निंग

प्रसारण और संचारण

चेतावनियां उन लोगों तक अवश्य पहुंचनी चाहिएं, जिनको ख़तरा है। सरल, उपयोगी जानकारी वाले स्पष्ट संदेश जो जीवन और आजीविका बचाने में मदद करेंगे, सही प्रतिक्रिया कर सकने लिए महत्वपूर्ण हैं। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और सामुदायिक स्तर की संचारण पद्धतियों की पहले से पहचान करना और उचित आधाकारिक आवाज़ें स्थापित करना ज़रूरी है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि यथासंभव ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को चेतावनी मिले, कोई स्रोत असफल न हो पाए और चेतावनी के संदेश को सुदृढ़ किया जाए, संचारण के कई स्रोतों का उपयोग करना ज़रूरी है।

प्रतिक्रिया करने की क्षमता

यह आवश्यक है कि समुदायों को उनके ख़तरों का ज्ञान हो; वे चेतावनी देने वाली सेवा का आदर करें और उन्हें मालूम हो कि प्रतिक्रिया किस तरह करें। शिक्षा और तैयार रखने के कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह भी आवश्यक है कि आपत्ति प्रबन्धन की योजनाएं मौजूद हों, उनका अच्छी तरह अभ्यास और परीक्षण किया जाए। समुदाय को सुरक्षित व्यवहार के विकल्पों, बच निकलने के उपलब्ध मार्गों और सम्पत्ति को क्षति और नुकसान से बचाने के सर्वोत्तम तरीक़ों के बारे में अच्छी तरह सूचित रखना चाहिए।

2. एक-दूसरे से जुड़े हुए मुद्दे

एक-दूसरे से जुड़े हुए कई मुद्दे हैं, जिन्हें चेतावनी देने की कारगर कार्य-प्रणालियां डिज़ाइन करते समय और उन्हें बनाए रखने के लिए, ध्यान में रखना चाहिए।

➢ **कारगर प्रशासन और संस्थागत व्यवस्थाएं**

पूरी तरह विकसित प्रशासन और संस्थागत व्यवस्थाएं, अग्रिम चेतावनी देने की दृढ़ कार्य-प्रणालियों के सफल विकास और उनकी धारणीयता को सहयोग देती है। ये ऐसी बुनियादें हैं जिनपर, पहले बताए गए, अग्रिम चेतावनी देने के चार तत्व, बनाए जाते हैं, उन्हें मज़बूत किया जाता है और उन्हें बनाए रखा जाता है।

अच्छा प्रशासन, मज़बूत वैधानिक और नियामक ढांचे द्वारा प्रोत्साहित होता है और दीर्घ-कालिक राजनीतिक बचनबद्धता और कारगर संस्थागत व्यवस्थाओं द्वारा इसे सहयोग दिया जाता है। प्रशासन को कारगर व्यवस्थाओं से स्थानीय निर्णय-प्रक्रिया और सहभागिता, जिसे राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर व्यापक प्रशासनिक और स्रोत-क्षमताओं से सहयोग मिलता है, को बढ़ावा मिलना चाहिए।

सीधा और समतल संचारण तथा-अग्रिम चेतावनी देने की प्रणाली के अंशधारकों के बीच समन्वय भी स्थापित करना चाहिए।

➢ **विविध ख़तरों के लिए नीति**

जहां भी संभव हो, अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली को ख़तरा-आधारित सभी कार्य-प्रणालियों से जोड़ना चाहिए। यदि एक बहु-उपयोगी ढांचे, जो सभी ख़तरों और अंतिम उपयोक्ता की ज़रूरतों पर विचार करता है, के अंतर्गत कार्य-प्रणालियां और संचालन-सम्बन्धी गतिविधियां स्थापित की जाती हैं और बनाई रखी जाती हैं, तो बड़े पैमाने की किफ़ायतें, धारणीयता और दक्षता बढ़ाई जा सकती है।

बहुत-से ख़तरों की अग्रिम चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणालियों को, किसी एक ख़तरे की चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणाली की अपेक्षा अधिक बार भी सक्रिय किया जाएगा, और इसलिए, सूनामी-जैसी ख़तरनाक, उच्च गहनता वाली घटनाओं के लिए, जो बार-बार होती है, बेहतर क्रियाशीलता और विश्वसनीयता उपलब्ध होनी चाहिए। बहुत-से ख़तरों वाली कार्य-प्रणालियों से जनता को भी, उन ख़तरों के रेन्ज को, जो उनके सामने आते हैं, बेहतर समझने में, और तैयार रहने की वांछित कार्यवाहियों और चेतावनी मिलने पर प्रतिक्रिया करने के व्यवहार को सुदृढ़ करने में मदद मिलती है।

➢ **स्थानीय समुदायों की सम्बद्धता**

अग्रिम चेतावनी देने की जन-केन्द्रित प्रणालियां उन लोगों की सीधी भागीदारी पर निर्भर होती हैं, जिनकी ख़तरों से एक्स्पोज़ होने की संभावना सबसे अधिक होती है। स्थानीय प्राधिकारियों और उन समुदायों, जिन्हें ख़तरा है की सम्बद्धता के बिना, सरकारी और संस्थागत हस्तक्षेप और ख़तरा उत्पन्न करने वाली घटनाओं से होने वाली प्रतिक्रिया, अपर्याप्त रहने की संभावना है।

स्थानीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता से, अग्रिम चेतावनी की स्थानीय, 'bottom-up' नीति, समस्याओं और ज़रूरतों की बहु-आयामी प्रतिक्रिया दिला सकती है। इस प्रकार, स्थानीय समुदाय, सामाजिक समूह और पारंपरिक ढांचे, असुरक्षा कम करने और स्थानीय क्षमताओं को बढ़ाने में अपना योगदान कर सकते हैं।

➢ **लैंगिक परिप्रेक्ष्य और सांस्कृतिक विभिन्नता पर विचार**

अग्रिम चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणालियां विकसित करते समय, यह मान लेना आवश्यक है कि विभिन्न समूहों में, संस्कृति, लिंग या अन्य विशिष्टताएं जो विपत्तियों के लिए कारगर ढंग से तैयार रहने, उन्हें रोकने और उनके प्रति प्रतिक्रिया करने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती हैं, के अनुसार, अलग-अलग असुरक्षाएं होती हैं। महिलाएं और पुरुष समाज में अक्सर अलग-अलग भूमिकाएं निभाते हैं और विपत्ति की स्थिति में उन्हें अलग-अलग तरह की जानकारियां दी जाती हैं। इसके अतिरिक्त, बुजुर्ग, असमर्थता वाले और सामाजिक-आर्थिक सुविधाओं से वंचित लोग अक्सर अधिक असुरक्षित रहते हैं।

जानकारी, संस्थागत व्यवस्था और चेतावनी के संचारण की कार्य-प्रणालियां इस तरह तैयार की जानी चाहिए कि वे प्रत्येक असुरक्षित समुदाय के प्रत्येक समूह की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त हों।

3. मुख्य कार्यकर्ता

अग्रिम चेतावनी देने की एक कारगर कार्य-प्रणाली विकसित और लागू करने के लिए भिन्न-भिन्न व्यक्तियों और समूहों का योगदान ज़रूरी होता है। निम्नलिखित सूची में, अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियों से जिस तरह के व्यक्ति और समूह सम्बद्ध किए जाने चाहिएं उनका और उनके कार्य और उनकी ज़िम्मेदारियां क्या होनी चाहिए इसका एक संक्षिप्त विश्लेषण दिया गया है।

समुदाय, ख़ासकर ऐसे समुदाय जो सबसे अधिक असुरक्षित हैं, अग्रिम चेतावनी देने की जन-केन्द्रित कार्य-प्रणालियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां स्थापित करने में, और उनके संचालन के सभी पहलुओं से, उन्हें सक्रिय रूप से सम्बद्ध किया जाना चाहिए; उनके सामने जो ख़तरे हैं उनसे और उन ख़तरों के संभावित प्रभावों से उन्हें अवगत होना चाहिए; और उन्हें क्षति या नुकसान के ख़तरों को कम-से-कम करने की कार्यवाही करने के लिए सक्षम होना चाहिए।

समुदायों और व्यक्तियों की तरह ही **स्थानीय सरकारें,** अग्रिम चेतावनी देने की कारगर कार्य-प्रणालियों के केन्द्र में हैं। उन्हें राष्ट्रीय सरकारों द्वारा सशक्त किया जाना चाहिए, उनके समुदायों के सामने जो ख़तरे हैं, उनकी उन्हें पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए, और अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां डिज़ाइन करने और उनका रख-रखाव करने में उन्हें सक्रिय रूप से सम्बद्ध रहना चाहिए। उन्हें सलाह के रूप में प्राप्त सूचना को समझने और स्थानीय आबादी को इस ढंग से सलाह देने, हिदायतें देने और काम में लगाने में अवश्य-सक्षम होना चाहिए, जिससे जन-सुरक्षा में वृद्धि हो और जिन संसाधनों पर समुदाय निर्भर हैं उनकी संभावित क्षति कम हो।

राष्ट्रीय सरकारें अग्रिम चेतावनी देने वाली प्रक्रिया को आसान बनाने और राष्ट्रीय ख़तरों की चेतावनी देने की क्षमताओं को सुदृढ़ करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि चेतावनियां और उनसे संबंधित प्रतिक्रियाएं सबसे अधिक असुरक्षित लोगों को भेजी जाती हैं, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सरकारों के साथ बातचीत करनी चाहिए। संचालन सम्बन्धी क्षमताएं विकसित करने के लिए स्थानीय समुदायों और सरकारों को सहयोग का प्रावधान भी एक आवश्यक कार्य है।

क्षेत्रीय संस्थान और संस्थाएं साझा भौगोलिक वातावरण शेयर करने वाले देशों में अग्रिम चेतावनी देने की क्षमताएं विकसित करने और उन्हें धारणीय बनाने के राष्ट्रीय प्रयासों को सहयोग देने वाला विशेषज्ञ-ज्ञान और सलाह देने में, अपनी भूमिका निभाती हैं। इसके अतिरिक्त, वे अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं को सहलग्नता को बढ़ावा देती हैं और पड़ोसी देशों में अग्रिम चेतावनी देने के कारगर आचरणों को आसान बनाती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, अग्रिम चेतावनी देने की राष्ट्रीय गतिविधियों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय, मानकीकरण, और सहयोग उपलब्ध करा सकते हैं और भिन-भिन्न देशों और क्षेत्रों के बीच आंकड़ों और जानकारी के आदान-प्रदान को बढ़ावा दे सकते हैं। सहयोग में शामिल किए जा सकते हैं: परामर्शदायी जानकारी, तकनीकी सहायता, और राष्ट्रीय प्राधिकरणों और एजेन्सियों की विकास व संचालन-सम्बन्धी क्षमताओं में मदद करने के लिए आवश्यक नीति सम्बंधी व संस्थागत सहयोग।

गैर-सरकारी संस्थाएं, अग्रिम चेतावनी देने से सम्बद्ध व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं में, विशेष रूप से सामुदायिक स्तर पर, जागरूकता बढ़ाने में भूमिका अदा करती हैं। अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां लागू करने और समुदायों को प्राकृतिक विपत्तियों के लिए तैयार करने में भी मदद कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, यह सुनिश्चित करने में मदद करने के लिए कि अग्रिम चेतावनी देना, सरकारी नीतियां तैयार करने वाले लोगों के एजेन्डा में मौजूद रहता है, ये एक महत्वपूर्ण समर्थक भूमिका निभा सकती हैं।

निजी क्षेत्र, अग्रिम चेतावनी देने में विविध भूमिकाएं निभाते हैं, जिनमें स्वयं अपनी संस्थाओं में अग्रिम चेतावनी देने की क्षमताएं विकसित करना शामिल हैं। विपत्तियों के बारे में आम जनता की चेतना बढ़ाने और अग्रिम चेतावनी प्रसारित करने में मीडिया की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। निजी क्षेत्र में, तकनीकी मानव-शक्ति, तकनीकी जानकारी या वस्तुओं या सेवाओं के दान (वस्तुओं या नगदी के रूप में) के रूप में दक्षता सेवाएं उपलब्ध कराने में मदद के लिए बड़ी मात्रा में अ-प्रयुक्त संभावनाएं मौजूद हैं।

विज्ञान और शैक्षिक समुदाय की, अग्रिम चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणालियां विकसित करने में सरकारों और समुदायों की मदद करने के लिए विशिष्ट वैज्ञानिक व तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका है। समुदायों के सामने आनी वाले प्राकृतिक विपत्तियों के ख़तरों का विश्लेषण करने, वैज्ञानिक और व्यवस्थित निगरानी प्रणाली और चेतावनी देने वाली सेवाएं डिज़ाइन किए जाने में अपना सहयोग देने, आंकड़ों के आदान-प्रदान को समर्थन देने, वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी को समझ में आने योग्य संदेशों में अनुवादित करने, और जो लोग ख़तरें में हैं उन्हें समझ सकने वाली चेतावनी प्रसारित करने में उनका विशेषज्ञ-ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है।

मुख्य तत्व 1: ख़तरे का ज्ञान

लक्ष्य: *ख़तरों और असुरक्षाओं के बारे में आंकड़े, मानचित्र और उनकी प्रवृत्तियां संग्रहित करने, उनका मूल्यांकन करने और उन्हें शेयर करने के लिए एक सुव्यवस्थित मानकीकृत प्रक्रिया स्थापित करना।*

मुख्य कार्यकर्ता

अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय विपत्ति प्रबन्धन एजेन्सियां; मौसम-विज्ञान और जल-विज्ञान संस्थाएं; भू-भौतिकी वैज्ञानिक, समाज-वैज्ञानिक; इंजीनियर; भू-उपयोग और शहरी आयोजन; अनुसंधानकर्ता और प्राध्यापक; विपत्तियों के प्रबन्धन से सम्बद्ध संस्थाएं और समुदायों के प्रतिनिधि; WMO, UN/ISDR, UNEP, UNU-EHS, UNOSAT, UNDP, FAO, UNESCO जैसी अन्तर्राष्ट्रीय और UN एजेन्सियां।

जांच-सूची

1. संस्थागत व्यवस्थाएं स्थापित की गईं

- ☐ ख़तरे और असुरक्षा का मूल्यांकन करने से सम्बद्ध मुख्य राष्ट्रीय सरकारी एजेन्सियों की पहचान की गई और उनकी भूमिकाएं स्पष्ट की गईं (उदाहरण के लिए, आर्थिक आंकड़ों, जन-संख्या सम्बन्धी आंकड़ों, भू-उपयोग का आयोजन, सामाजिक आंकड़े, इत्यादि।)
- ☐ ख़तरे की सूचना, असुरक्षा और ख़तरे के मूल्यांकन का काम एक राष्ट्रीय संस्था को सौंपा गया।
- ☐ सभी समुदायों के लिए ख़तरे और असुरक्षा के नक्शे तैयार करने का आदेशात्मक कानून या सरकारी नीति लागू है।
- ☐ ख़तरे और असुरक्षा के आंकड़े व्यवस्थित रूप से संग्रहित करने, बांटने और मूल्यांकन करने के राष्ट्रीय मानदंड विकसित किए गए, और यदि उचित समझा गया तो, उन्हें पड़ोसी या क्षेत्रीय देशों के साथ मानकीकृत किया गया है।
- ☐ वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा ख़तरे के आंकड़ों और जानकारी का मूल्यांकन और समीक्षा किए जाने की प्रक्रिया विकसित की गई।
- ☐ स्थानीय ख़तरों और असुरक्षा का विश्लेषण करने में समुदायों को सक्रिय रूप से संलिष्ट करने की रणनीति विकसित की गई।
- ☐ ख़तरे के आंकड़ों की प्रति वर्ष समीक्षा करने और उन्हें अद्यतन करने, और किसी नई या भावी असुरक्षाओं और ख़तरों के बारे में जानकारी शामिल करने की प्रक्रिया स्थापित की गई।

2. प्राकृतिक ख़तरों की पहचान की गई

- ☐ मुख्य प्राकृतिक ख़तरों की विशिष्टताओं (उदाहरण के लिए गहनता, बारंबारता और संभाविता) का विश्लेषण किया गया और ऐतिहासिक आंकड़ों का मूल्यांकन किया गया।
- ☐ प्राकृतिक ख़तरों से प्रभावित हो सकने वाले भौगोलिक क्षेत्रों और समुदायों की पहचान करने के लिए ख़तरे के मानचित्र विकसित किए गए।
- ☐ (जहां भी संभव था) एक से अधिक प्राकृतिक ख़तरों के एक-दूसरे पर प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए ख़तरों का एक एकीकृत मानचित्र विकसित किया गया।

3. समुदाय की असुरक्षा का विश्लेषण किया गया

- ☐ सभी संभावित प्राकृतिक ख़तरों से समुदाय की असुरक्षा का मूल्यांकन किया गया।
- ☐ असुरक्षा का मूल्यांकन करने में, ऐतिहासिक आंकड़ों के स्रोतों और भविष्य में होने वाली ख़तरों की संभावित घटनाओं पर विचार किया गया।
- ☐ लिंग, असमर्थता, संरचानओं तक पहुंच, आर्थिक विभिन्नता और वातावरण सम्बन्धी संवेदनशीलताओं जैसे घटकों पर विचार किया गया।
- ☐ असुरक्षाओं का दस्तावेज और मानचित्र तैयार किया गया (उदाहरण के लिए, तट रेखा पर रहने वाले लोगों और समुदायों की पहचान की गई और मानचित्र तैयार किए गए)।

4. ख़तरों का मूल्यांकन किया गया

- ☐ प्रत्येक क्षेत्र या समुदाय पर आने वाले ख़तरों को निर्धारित करने के लिए ख़तरों और असुरक्षाओं पर एक-दूसरे के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया।
- ☐ यह सुनिश्चित करने के लिए कि ख़तरे की जानकारी व्यापक है और इसमें ऐतिहासिक और देशी ज्ञान, और स्थानीय जानकारी तथा राष्ट्रीय स्तर के आंकड़े शामिल हैं, समुदाय और उद्योग के साथ परामर्श किए गए।
- ☐ जिन गतिविधियों से ख़तरे बढ़ते हैं उनकी पहचान की गई और उनका मूल्यांकन किया गया।
- ☐ ख़तरों के मूल्यांकन के परिणामों का, स्थानीय ख़तरों के प्रबन्धन की योजनाओं और चेतावनी के संदेशों के साथ एकीकृत किया गया।

5. जानकारी स्टोर की गई और वह सुलभ है

- ☐ विपत्ति और प्राकृतिक ख़तरे के जोखिमों के बारे में सारी जानकारी को स्टोर करने के लिए केन्द्रीय 'लाइब्रेरी' या GIS डेटाबेस स्थापित किया गया।
- ☐ ख़तरे और सुरक्षा के आंकड़े सरकार, जनता और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को (यदि उचित हो) उपलब्ध हैं।
- ☐ आंकड़ों को वर्तमान और अद्यतन रखने के लिए रख-रखाव की योजना विकसित की गई।

मुख्य तत्व 2: निगरानी रखना और चेतावनी सेवा

लक्ष्य: *ठोस वैज्ञानिक और तकनीकी आधार के साथ, ख़तरों पर निगरानी रखने और चेतावनी देने की एक कारगर सेवा स्थापित करना।*

मुख्य कार्यकर्ता

मौसम-विज्ञान और जल-विज्ञान की राष्ट्रीय सेवाएं; विशिष्ट वेधशाला और चेतावनी देने वाले केन्द्र (उदाहरण के लिए पानी, सूनामी, ज्वालामुखी, और जलवायु के लिए); विश्वविद्यालय; अनुसंधान करने वाली संस्थाएं; निजी क्षेत्र के उपकरण आपूर्तिकर्ता; दूर-संचार प्राधिकरण; गुणवत्ता प्रबन्धन विशेषज्ञ; क्षेत्रीय तकनीकी केन्द्र UN/ISDR, WMO, FAO, UNESCO, UNEP, UNOSAT, OCHA, ITU जैसी UN एजेन्सियां।

जांच-सूची

1. संस्थागत ढांचा स्थापित किया गया

- ☐ चेतावनियां उत्पन्न और जारी करने वाली सभी संस्थाओं की मानकीकृत प्रक्रिया, और उनकी भूमिकाएं और जिम्मेदारियां स्थापित की गईं और कानून द्वारा उन्हें आदेशात्मक बनाया गया।
- ☐ अलग-अलग ख़तरे अलग-अलग एजेन्सियों द्वारा हैन्डल किए जाने की स्थिति में, चेतावनी की भाषा और संचारण के स्रोतों में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए, विभिन्न एजेन्सियों के बीच समझौते और प्रोटोकोल स्थापित किए गए।
- ☐ चेतावनी देने वाली विभिन्न प्रणालियों के बीच पारस्परिक दक्षता और प्रभावकारिता प्राप्त करने के लिए, सभी ख़तरों के लिए एक ही योजना स्थापित की गई।
- ☐ चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली के सभी सहभागी, जिनमें स्थानीय प्राधिकरण, अवगत हैं कि चेतावनियों के लिए कौन-कौन-सी संस्थाएं जिम्मेदार हैं।
- ☐ संचारण की जिम्मेदारियां और चेतावनी देने की तकनीकी सेवाएं परिभाषित करने के लिए प्रोटोकोल स्थापित किया गया है।
- ☐ अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संस्थाओं के साथ संचारण की व्यवस्थाओं पर समझौते किए गए और वे संचालन में हैं।
- ☐ क्षेत्रीय-परेशानियों, जैसे ट्रॉपिकल सायक्लोन्स, साझा मुहानों में आने वाली बाढ़, आंकड़ों का आदान-प्रदान, और तकनीकी क्षमता का निर्माण, के लिए समझौते, समन्वय-तंत्र और विशिष्ट केन्द्र स्थापित किए जा चुके हैं।
- ☐ चेतावनी देने वाली कार्य-प्रणाली का वर्ष में कम-से-कम एक बार, प्रणाली-व्यापक परीक्षण और अभ्यास किया जाएगा।
- ☐ चेतावनी देने की तकनीकी कार्य-प्रणालियों पर सभी ख़तरों के लिए राष्ट्रीय समिति स्थापित की जा चुकी है और यह राष्ट्रीय विपत्ति प्रबन्धक और लघुकरण प्राधिकरणों, जिनमें विपत्ति के ख़तरे कम करने के लिए राष्ट्रीय रंगमंच शामिल है, से जुड़ी हुई है।
- ☐ यह सत्यापन करने के लिए कि चेतावनियां अपेक्षित प्राप्तकर्ताओं तक पहुंच गई हैं, कार्य-प्रणाली स्थापित की गई।
- ☐ चेतावनी केन्द्र में हर समय काम करने के लिए कर्मचारी नियुक्त किए गए (प्रतिदिन 24 घंटे, प्रति सप्ताह सात दिन)।

2. मॉनीटर करने की कार्य-प्रणालियां विकसित की गईं

- ☐ प्रत्येक सम्बद्ध ख़तरे को मापने के पैरामीटर्स और उनकी विशिष्टताओं के दस्तावेज़ तैयार किए गए।
- ☐ नेटवर्क्स को मॉनीटर करने की योजनाएं और दस्तावेज़ उपलब्ध हैं और विशेषज्ञों और सम्बद्ध प्राधिकारियों की सहमति प्राप्त की गई।
- ☐ स्थानीय स्थितियों और परिस्थितियों के अनुकूल तकनीकी उपकरण उपलब्ध हैं और उनके उपयोग और रख-रखाव के लिए कर्मचारी प्रशिक्षित किए गए।
- ☐ क्षेत्रीय नेटवर्क्स, आप-पास के क्षेत्रों और अन्तर्राष्ट्रीय स्रोतों से, लागू होने वाले आंकड़े और विश्लेषण सुलभ हैं।
- ☐ प्राप्त आंकड़ों का प्रसंस्करण किया गया और वे सार्थक स्वरूप में, वास्तविक समय, या लगभग वास्तविक समय में उपलब्ध हैं।
- ☐ सम्बद्ध ख़तरों से सम्बंधित असुरक्षाओं पर आंकड़े प्राप्त करने, उनकी समीक्षा करने और उन्हें बांटने के लिए रणनीति उपलब्ध है।
- ☐ आंकड़ों को नियमित रूप से अभिलेखित किया जाता है और वे सत्यापन और अनुसंधान के लिए सुलभ हैं।

3. पूर्वानुमान लगाने और चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां स्थापित की गईं

- ☐ आंकड़ों का विश्लेषण, भविष्यवाणी और चेतावनी उत्पन्न करना स्वीकार्य वैज्ञानिक और तकनीकी तरीकों पर आधारित हैं।
- ☐ आंकड़ों और चेतावनी देने की उत्पाद, अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों और प्रोटोकोल्स के अन्तर्गत जारी किए जाते हैं।
- ☐ चेतावनी के विश्लेषक, उचित अन्तर्राष्ट्रीय मानदन्डों के अनुसार प्रशिक्षित किए गए हैं।
- ☐ चेतावनी देने के केन्द्र, आंकड़े हैन्डल करने और भविष्यवाणी करने के मॉडल्स चलाने के लिए उचित उपकरणों से लैश हैं।
- ☐ असफल होने से सुरक्षित कार्य-प्रणालियां, जैसे पावर-बैक-अप, उपकरण फालतू होने की स्थिति और बुलाए जाते ही उपलब्ध होने वाले कर्मचारियों की कार्य-प्रणाली, स्थापित है।
- ☐ चेतावनियां कुशल और समयोचित ढंग से और ऐसे स्वरूप में, जो उपयोक्ता की ज़रूरत के अनुकूल होती हैं, तैयार और प्रसारित की जाती है।
- ☐ संचालन सम्बन्धी प्रक्रियाओं, जिनमें आंकड़ों की गुणवत्ता और चेतावनी देने का कार्य-निष्पादन, शामिल हैं, को नियमित रूप से मॉनीटर करने और उनका मूल्यांकन करने की योजना लागू की गई।

मुख्य तत्व 3: प्रसारण और संचारण

लक्ष्य: *यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोगों और समुदायों को आने वाले ख़तरे की घटनाओं की चेतावनी पहले से दी जाती है और राष्ट्रीय व क्षेत्रीय समन्वय और जानकारी के आदान-प्रदान सुविधा उपलब्ध हैं, संचारण व प्रसार की कार्य-प्रणालियां विकसित करना।*

मुख्य कार्यकर्ता

अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय विपत्ति प्रबन्धन एजेन्सियां; मौसम-विज्ञान और जल-विज्ञान की राष्ट्रीय सेवाएं; सैनिक और असैनिक प्राधिकरण; मीडिया की संस्थाएं (प्रिंट, टेलीविजन, रेडियो और ऑन-लाइन); असुरक्षित क्षेत्रों के व्यवसायी (उदाहरण के लिए, पर्यटन, बुजुर्गों की देखभाल करने वाली सेवाएं; समुद्री जहाज); समुदाय-आधारित और बुनियादी संस्थाएं; UN/ISDR, IFRC, UNDP, UNESCO, UNEP, WMO, OCHA जैसी अन्तर्राष्ट्रीय और UN एजेन्सियां।

जांच-सूची

1. संस्था सम्बन्धी और निर्णय लेने वाली प्रक्रियाओं को संस्थापित किया गया

- ☐ चेतावनी प्रसारित करने वाली शृंखला सरकारी नीति या कानून के जारिये लागू की गई (उदाहरण के लिए सरकार से आपातस्थिति के प्रबन्धकों और समुदाय इत्यादि को भेजा गया संदेश)।
- ☐ मान्य प्राधिकरणों को चेतावनी के संदेश प्रसारित करने का अधिकार दिया गया (उदाहरण के लिए, मौसम-विज्ञान सम्बन्धी प्राधिकरणों को मौसम के बारे में, स्वास्थ्य प्राधिकरणों को स्वास्थ्य सम्बन्धी चेतावनी संदेश देंगे)।
- ☐ चेतावनी देने की प्रक्रिया के प्रत्येक कार्यकर्ता के कार्यों, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को, कानून या सरकार की नीति में निर्दिष्ट किया गया (उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय मौसम-विज्ञान और जल-विज्ञान सम्बन्धी सेवाएं, मीडिया, गैर-सरकारी संस्थाएं)
- ☐ क्षेत्रीय या सीमा पार के अग्रिम चेतावनी देने के केन्द्रों की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां परिभाषित की गईं, जिनमें पड़ोस के देशों को चेतावनी भेजना शामिल है।
- ☐ स्वेच्छा सेवी नेटवर्क को, ख़तरों की चेतावनी प्राप्त करने और दूर-दूर के परिवारों और समुदायों को व्यापक रूप से भेजने के लिए प्रशिक्षित और अधिकृत किया गया।

2. कारगर संचार प्रणालियां और उपकरण लगाए गए

- ☐ संचारण और प्रसारण प्रणालियों को अलग-अलग समुदायों की ज़रूरत के अनुकूल बनाया गया (उदाहरण के लिए, जिनको ये सुलभ हैं उनके लिए रेडियो या टेलीविज़न; और दूर-दूर के इलाकों के समुदायों के लिए सायरन, झन्डे या संदेश-वाहक व्यक्ति)
- ☐ चेतावनी देने की संचारण प्रौद्योगिकी, सम्पूर्ण जनसंख्या, जिनमें मौसम पर निर्भर जनसंख्या और दूर-दूर के स्थान शामिल हैं, तक पहुंचती है।
- ☐ उचित उपकरणों की पहचान करने और उन्हें प्राप्त करने में मदद के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं या विशेषज्ञों से परामर्श किया गया।
- ☐ चेतावनी देने के लिए संचारण के कई माध्यमों का उपयोग किया गया (उदाहरण के लिए, जनसंपर्क माध्यम और अनौपचारिक संचारण)।
- ☐ जहां भी उचित हो, निजी क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग करने के समझौते विकसित किए गए। (उदाहरण के लिए, अमेचर रेडियो, सुरक्षा शेल्टर)।
- ☐ सभी ख़तरों के लिए चेतावनी के प्रसारण और संचारण प्रणालियों का लगातार उपयोग किया गया।
- ☐ संचारण प्रणाली दो-तरफा और पारस्परिक आदान-प्रदान करने वाली है, ताकि चेतावनी पहुंचने का सत्यापन किया जा सके।
- ☐ उपकरणों के रख-रखाव और उन्हें अप-ग्रेड करने के कार्यक्रम तथा उपकरणों के फालतू होने की स्थिति लागू की गई, ताकि उनके असफल होने पर बैक-अप प्रणाली उपलब्ध रहे।

3. चेतावनी के संदेश पहचाने और समझ लिए जाते हैं

- ☐ सतर्कता की चेतावनियां और देश, जिन लोगों को ख़तरा है, उनकी विशिष्ट ज़रूरतों के अनुकूल बनाए गए (उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक, सामाजिक, लैंगिक, भाषाई और शिक्षा-सम्बन्धी अलग-अलग पृष्ठभूमि)।
- ☐ सतर्कता की चेतावनियां और संदेश भौगोलिकता-विशिष्ट हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि चेतावनियां सिर्फ उनके लिए ही हों, जो ख़तरे में हैं।
- ☐ संदेशों में, उन लोगों के नैतिक-मूल्यों, चिन्ताओं और हितों की समझ सम्मिलित है, जिन्हें कार्रवाई करनी पड़ेगी। उदाहरण के लिए, पशुओं और पालतू जानवरों को बचाना)।
- ☐ सतर्कता की चेतावनियां स्पष्ट रूप से पहचानी जा सकने वाली हैं और कुछ समय तक लगातार दी जाती है और इनमें ज़रूरतों के अनुसार बाद में की जाने वाली कार्यवाही शामिल है।
- ☐ चेतावनियां ख़तरे की प्रकृति और उसके प्रभाव को विशेष रूप से स्पष्ट करती हैं।
- ☐ ख़तरा टल जाने के बाद समुदाय को सूचित करने की युक्ति स्थापित है।
- ☐ अग्रिम चेतावनी के संदेशों को लोग किस तरह प्राप्त करते और उनके अर्थ लगाते हैं, इसका अध्ययन किया गया है और इससे मिली सीख को संदेशों के स्वरूप और भेजने की प्रक्रिया में सम्मिलित कर लिया गया है।

मुख्य तत्व 4: प्रतिक्रिया करने की क्षमता

लक्ष्य: *प्राकृतिक ख़तरों के जोख़िमों के बारे में और अधिक शिक्षा, समुदाय की भागीदारी और विपत्तियों के लिए तैयार रहने के जरिए प्राकृतिक विपत्तियों पर प्रतिक्रिया करने की समुदायों की क्षमता को मज़बूत बनाना।*

मुख्य कार्यकर्ता

समुदाय-आधारित और बुनियादी संस्थाएं; स्कूल; विश्वविद्यालय; अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र; मीडिया (प्रिंट, रेडियो, टेलीविज़न; ऑन-लाइन); ख़तरों के बारे में विशिष्ट ज्ञान वाली तकनीकी एजेन्सियां; विपत्तियों का प्रबन्धन करने वाली अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय एजेन्सियां; विपत्ति का प्रबन्धन करने वाली क्षेत्रीय एजेन्सियां; OCHA, UNDP, UNEP, FAO, UNESCO, UN/ISDR, IFRC, WMO जैसी UN एजेन्सियां।

जांच-सूची

1. चेतावनियों का आदर किया जाता है

- ☐ विश्वसनीय स्रोतों (उदाहरण के लिए सरकार, आध्यात्मिक नेता, आदरणीय सामुदायिक संस्थाओं) द्वारा चेतावनियां तैयारी की गईं और उन लोगों को वितरित की गईं जिनको ख़तरा है।
- ☐ समुदाय की प्रतिक्रियाओं का पूर्वानुमान लगाने के लिए प्राकृतिक ख़तरों के जोखिमों और चेतावनी देने की सेवा के बारे में जनता के प्रत्यक्ष ज्ञान का विश्लेषण किया गया।
- ☐ चेतावनियों में विश्वसनीयता और भरोसा बढ़ाने के लिए रणनीतियां विकसित की गईं (उदाहरण के लिए, पूर्वानुमान और चेतावनियों के अन्तर को समझना)।
- ☐ चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली में विश्वास बनाए रखने के लिए, ख़तरे की ग़लत चेतावनी देना कम-से-कम किया गया और सुधार बताए गए।

2. विपत्ति के लिए तैयार रहने और प्रतिक्रिया करने की योजनाएं स्थापित की गईं

- ☐ विपत्ति के लिए तैयार रहने और प्रतिक्रिया करने की योजनाओं को कानून द्वारा सशक्त किया गया।
- ☐ विपत्ति के लिए तैयार रहने और प्रतिक्रिया करने की योजनाएं असुरक्षित समुदायों की अलग-अलग ज़रूरतों के लिए तैयार की गईं।
- ☐ आपात स्थिति के लिए तैयार रहने और प्रतिक्रिया करने की योजनाएं विकसित करने के लिए, ख़तरों और असुरक्षा के मानचित्रों का उपयोग किया गया।
- ☐ आपात स्थिति के लिए अद्यतन तैयारी और प्रतिक्रिया करने की योजनाएं विकसित की गईं, समुदाय को बताई गईं और उनका अभ्यास किया गया।
- ☐ विपत्ति की पिछली घटनाओं और उन पर हुई प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया, और उनसे मिली सीख को विपत्ति प्रबन्धन की योजनाओं में सम्मिलित किया गया।
- ☐ ख़तरों की बार-बार होने वाली घटनाओं के लिए तैयारी बनाए रखने के लिए रणनीतियां लागू की गईं।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने की प्रक्रियाओं और प्रतिक्रियाओं की प्रभावशालिता की जांच करने के लिए, नियमित परीक्षण और ड्रिल किए गए।

3. समुदाय द्वारा प्रतिक्रिया करने की क्षमता का मूल्यांकन किया गया और उसे मज़बूत बनाया गया

- ☐ अग्रिम चेतावनियों पर कारगर ढंग से प्रतिक्रिया करने की समुदाय की क्षमता का मूल्यांकन किया गया।
- ☐ पिछली विपत्तियों पर की गई प्रतिक्रिया का विश्लेषण किया गया और उनसे मिली सीख को क्षमता बढ़ाने की भविष्य की रणनीतियों में सम्मिलित किया गया।
- ☐ क्षमता बढ़ाने के काम में मदद के लिए, समुदाय-केन्द्रित संस्थाओं से मदद ली गई।
- ☐ समुदाय और स्वेच्छा सेवियों के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण के कार्यक्रम विकसित किए गए और उन्हें लागू किया गया।

4. जनता की जागरूकता और शिक्षा में वृद्धि

- ☐ ख़तरों, असुरक्षाओं, के बारे में सरल-जानकारी,
- ☐ जोखिमों और विपत्तियों का प्रभाव कम करने के तरीकों के बारे में सरल-जानकारी असुरक्षित समुदायों और निर्णय लेने वाले लोगों को दी गई।
- ☐ चेतावनियां किस तरह दी जाएंगी और कौन-से स्रोत विश्वसनीय हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार के ख़तरों पर अग्रिम चेतावनी संदेश मिलने के बाद, प्रतिक्रिया करने की तरीकों, पर समुदाय को शिक्षित किया गया।
- ☐ समुदाय को सरल, जल और मौसम विज्ञान सम्बंधी और भू-भौतिक ख़तरों के संकेतों को पहचानने के लिए प्रशिक्षित किया गया, ताकि फौरन प्रतिक्रिया की जा सके।
- ☐ प्राथमिक स्कूलों से विश्वविद्यालय तक के पाठ्यक्रमों में, हमेशा जारी रहने वाली जन-जागरूकता और शिक्षा के विषय शामिल किए गए।
- ☐ जनता की जागरूकता में सुधार लाने के लिए, जनसंपर्क माध्यमों और लोक या वैकल्पिक माध्यमों का उपयोग किया गया।
- ☐ जन-जागरूकता और शिक्षा अभियानों को, प्रत्येक श्रोता (उदाहरण के लिए बच्चों, आपात स्थिति के प्रबन्धकों, मीडिया) की विशिष्ट ज़रूरत के अनुकूल बनाया गया।
- ☐ जन-जागरूकता की रणनीतियों और कार्यक्रमों का वर्ष में कम-से-कम एक बार मूल्यांकन किया गया और जहां ज़रूरी हुआ उसे अद्यतन किया गया।

एक दूसरे से जुड़े मुद्दे:

प्रशासन और संस्थागत व्यवस्थाएं

लक्ष्य: *अग्रिम चेतावनी देने की कारगर कार्य-प्रणाली के लागू करने और उसे बनाए रखने की प्रक्रिया को सहयोग देने वाला, संस्थागत, वैधानिक और नीति-सम्बंधी ढांचा विकसित करना।*

मुख्य कार्यकर्ता

राजनीतिक नेता, नीतियां बनाने वाले लोग (उदाहरण के लिए, वातावरण, विकास और योजना विभाग); विपत्ति प्रबन्धन की राष्ट्रीय और स्थानीय एजेन्सियां; मौसम-विज्ञान और जल-विज्ञान सम्बंधी एजेन्सियां; अनुसंधानकर्ता और प्राध्यापक; गैर-सरकारी संस्थाएं; UNDP, UNEP, FAO, UNESCO, UN/ISDR, WMO, विश्व बैंक और क्षेत्रीय विकास बैंक, IFRC जैसी अन्तर्राष्ट्रीय एवं UN एजेन्सियां।

जांच-सूची

1. अग्रिम चेतावनी देने की प्रक्रिया को दीर्घ-कालिक राष्ट्रीय और स्थानीय प्राथमिकता के रूप में निश्चित किया गया।

- ☐ वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों और राजनीतिक नेताओं को अग्रिम चेतावनी देने के आर्थिक लाभ, व्यावहारिक तरीकों, जैसे पिछली विपत्तियों का लगात-लाभ विश्लेषण, का उपयोग करते हुए ज़ोर देकर बताये गए।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने की सरल कार्य-प्रणालियों के उदाहरण और केस-स्टडीज़ वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों और राजनीतिक नेताओं को दिए गए।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने की प्रक्रिया को समर्थन देने और इसके लाभों को बढ़ावा देने के लिए, अग्रिम चेतावनी के 'रोल-मॉडल्स' या ''चैम्पियन'' नियुक्त किए गए।
- ☐ प्राकृतिक ख़तरे के जोख़िमों, जिनके लिए अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली ज़रूरी होती है, की प्राथमिकता पहचानी गई, और कई ख़तरों वाले ढांचे के अंतर्गत संचालन की व्यवस्था स्थापित की गई।
- ☐ प्राथमिक चेतावनी देने की प्रक्रिया को राष्ट्रीय अर्थिक योजना के साथ स्वीकृत किया गया।

2. अग्रिम चेतावनी देने की प्रक्रिया को समर्थन देने के लिए, कानूनी और नीति-सम्बंधी ढांचा स्थापित किया गया

- ☐ अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां लागू करने का एक संस्थागत और कानूनी आधार उपलब्ध कराने के लिए, राष्ट्रीय विधान या नीतियां विकसित की गईं।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने से सम्बद्ध सभी संस्थाओं (सरकारी और गैर-सरकारी) की स्पष्ट भूमिकाएं और जिम्मेदारियां निर्धारित की गईं।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने की प्रक्रिया का समन्वय करने की समग्र जिम्मेदारी और अधिकार सिर्फ एक राष्ट्रीय एजेन्सी को दिए गए।
- ☐ सिर्फ़ एक राजनीतिक नेता या वरिष्ठ सरकारी अधिकारी को, कानून द्वारा, राष्ट्रीय निर्णयकर्ता के रूप में अधिकृत किया गया।
- ☐ विपत्तियों के प्रबन्धन का विकेन्द्रीकरण करने और समुदाय की भागीदारी प्रोत्साहित करने के लिए नीतियां विकसित की गईं।
- ☐ स्थानीय स्तर पर फैसला करने और अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणालियां लागू करने की प्रक्रिया को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर, विस्तृत शासकीय और संसाधन क्षमताओं के अन्तर्गत रखा गया।
- ☐ यह सुनिश्चित करने के लिए कि, जहां भी संभव हो, अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली को समायोजित किया जाए, क्षेत्रीय और सीमा-पार के समझौते-स्थापित किए गए।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने से सम्बद्ध सभी संस्थाओं के बीच पारस्परिक सम्बंधों और सहभागिता को संस्थागत किया गया और समन्वय तंत्र को आदेशात्मक बनाया गया।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने की प्रक्रिया को विपत्ति कम करने ाली और विकास की नीतियों में समायोजित किया गया।
- ☐ नीतियों और कानून को समर्थन देने के लिए मॉनीटर करने और लागू करने की प्रणाली मौजूद है।

3. संस्थागत क्षमताओं का मूल्यांकन किया गया और उनमें वृद्धि की गई

- ☐ सभी सम्बद्ध संस्थाओं और संस्थानों की क्षमताओं का मूल्यांकन किया गया और क्षमता बढ़ाने की योजनाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित व संलाकित किए गए।
- ☐ गैर-सरकारी क्षेत्र को, क्षमता बनाने के काम मे योगदान करने के लिए सम्मिलित और प्रोत्साहित किया गया।

4. वित्तीय संसाधन निश्चित किए गए

- ☐ अग्रिम चेतावनी देने और विपत्तियों के लिए तैयार रहने के प्रयोजन से, सरकार द्वारा आर्थिक सहायता किए जाने के उपाय विकसित करने में मदद के लिए सरकारी/निजी सहभागिता का उपयोग किया गया।
- ☐ अन्तर्राष्ट्रीय या क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक सहायता प्राप्त करने की संभावना तलाशी गई।
- ☐ अग्रिम चेतावनी देने की कार्य-प्रणाली विकसित करने में मदद के लिए सरकारी/निजी सहभागिता का उपयोग किया गया।

परिवर्णी शब्दों की सूची

EWC III	Third International Conference on Early Warning
FAO	Food and Agriculture Organization
IFRC	International Federation of Red Cross and Red Crescent Societies
ITU	International Telecommunication Union
NGO	Non-Governmental Organization
OCHA	Office for the Coordination of Humanitarian Affairs of the United Nations Secretariat
UN	United Nations
UNDP	United Nations Development Programme
UNEP	United Nations Environment Programme
UNESCO	United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
UN/ISDR	United Nations International Strategy for Disaster Reduction
UNOSAT	United Nations initiative to provide the humanitarian community with access to satellite imagery and Geographic Information System services
UNU-EHS	United Nations University Institute for Environment and Human Security
PPEW	Platform for Promotion of Early Warning
WMO	World Meteorological Organization

संपर्क सम्बन्धी जानकारी

UN/ISDR Platform for the Promotion of Early Warning (PPEW)
Hermann-Ehlers-Strasse 10
D - 53113 Bonn
Germany
isdr-ppew@un.org
www.unisdr-earlywarning.org

UN Secretariat of the International Strategy for Disaster Reduction (UN/ISDR)
Palais des Nations
CH - 1211 Geneva 10
Switzerland
isdr@un.org
www.unisdr.org

यह दस्तावेज़ संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वाधान में, जर्मनी की सरकार द्वारा 27 से 29 मार्च 2006 तक बॉन, जर्मनी में संयोजित, अग्रिम चेतावनी देने के बारे में तीसरी अन्तर्राष्ट्रीय कान्फेरेन्स (EWC III) का परिणाम है।